REVIEW OF RESEARCH
ISSN: 2249-894X
IMPACT FACTOR : 5.7631(UIF)
UGC APPROVED JOURNAL NO. 48514
VOLUME - 8 | ISSUE - 9 | JUNE - 2019

सर्वधर्म सम्भाव में रामकृष्ण परमहंस के उपदेशों की प्रासंगिकता

प्रियंका कुमारी
शोधार्थी, इतिहास विभाग, ल.ना.मिथिला विश्वविद्यालय, दरभंगा.

प्रस्तावना :

रामकृष्ण परमहंस अपने जीवन काल में भारतीय समाज के लिए जितने प्रासंगिक थे उससे कहीं अधिक प्रासंगिक और आवश्यक आज हैं। धार्मिक कट्टरता की वापसी के इस दौर में उनका जीवन हमें यह बताता है कि उदारता और पारस्परिक स्वीकृति–सम्मान की बहुमूल्य विरासत को गंवा बैठने की हमारी गलती ने किस प्रकार हमारी आध्यात्मिक यात्रा को बाधित कर हमें संकीर्णताओं की हिंसक गलियों में भटका दिया है।

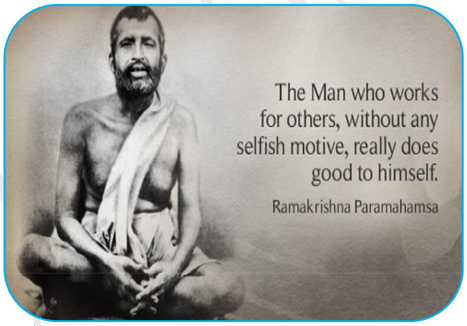

उन्होंने कितने ही सरल उदाहरणों के द्वारा यह बताया कि परम तत्व एक ही है। वे कहते हैं– एक ही सरोवर के अनेक घाट हैं। एक घाट पर हिन्दू अपने कलशों में पानी भरते हैं और उसे जल की संज्ञा देते हैं । दूसरे घाट पर मुसलमान अपनी मश्कों में पानी भरते हैं और उसे पानी या आब कहते हैं। तीसरे घाट पर ईसाई जल लेते हैं और उसे वाटर का नाम देते हैं। क्या हम कल्पना भी कर सकते हैं कि यह वारि जल नहीं है अपितु वाटर अथवा पानी ही है। कितनी हास्यास्पद बात है। भिन्न नामों के आवरण के नीचे एक ही वस्तु है और प्रत्येक उसे तलाश रहा है। जलवायु, स्वभाव तथा नाम ही भिन्न है अन्यथा और कोई भेद नहीं है। प्रत्येक मनुष्य को अपने मार्ग पर चलने दें। यदि उसमें हार्दिक भाव से भगवान को जानने की उत्कंठा है तो वह अवश्य ही उन्हें प्राप्त कर लेगा।

वे एक अन्य उदाहरण देते हैं– यदि हम किसी कुम्हार की दुकान में जाते हैं तो हमें विभिन्न आकार के बर्तन दिखाई देते हैं किंतु सभी का मूल तत्व मिट्टी है। इसी प्रकार ईश्वर एक है किंतु हम उसे अलग अलग काल में अलग अलग स्थानों पर भिन्न भिन्न नाम और स्वरूप से जानते और पूजते हैं। स्वर्ण से विभिन्न प्रकार के गहने बनाए जाते हैं यद्यपि सभी स्वर्ण से निर्मित हैं किंतु इनका अलग अलग नाम और स्वरूप होता है। इसी प्रकार एक ही ईश्वर विभिन्न देश और काल में विभिन्न नाम और स्वरूप में पूजा जाता है। अपनी अपनी अवधारणाओं के आधार पर लोग विभिन्न विधियों और स्वरूपों में ईश्वर की उपासना करते हैं। कुछ माता के रूप में तो कुछ पिता के रूप में, कुछ सखा मानकर तो कुछ प्रेमी या प्रेमिका समझकर उसकी पूजा करते हैं। कुछ तो परमात्मा को अपना शिशु समझकर उस पर अपना वात्सल्य लुटाते हैं। वे इसी सत्य को एक अन्य रूप में समझाते हैं– घर का मुखिया एक होता है किंतु घर के किसी सदस्य के लिए वह पिता होता है तो किसी के लिए पति। किसी के लिए वह भाई होता है तो किसी के लिए पुत्र। जिस प्रकार घर का हर सदस्य घर के मुखिया से स्वयं के संबंध के आधार पर उसे परिभाषित करता है उसी प्रकार अलग अलग श्रद्धालु उसी रूप में परमात्मा को चित्रित करते हैं जिस रूप में वे उन्हें जानते हैं।

श्री रामकृष्ण परमहंस के अनुसार जिस प्रकार घर की छत पर पहुंचने के लिए हम सीढ़ी, बांस या रस्सी की मदद ले सकते हैं उसी प्रकार परमात्मा को प्राप्त करने के लिए

विभिन्न साधनों का प्रयोग कर सकते हैं। विभिन्न धर्म एक परमात्मा को प्राप्त करने के साधन मात्र हैं। जिस प्रकार कलकत्ता के कालीघाट के काली माता के इस मंदिर तक पहुंचने के अनेक रास्ते हैं उसी प्रकार परमात्मा को प्राप्त करने के अनेक रास्ते हैं। यह रास्ते ही विभिन्न धर्मों के रूप में हमें दिखते हैं। परमात्मा का स्मरण हमेशा आनंददायी होता है भले ही उसकी उपासना जिस भी रूप में की जाए। जिस प्रकार शक्कर से बनी मिठाई मीठी ही लगेगी चाहे हम उसे सीधा पकड़ कर खाएं या तिरछा।

प्रत्येक व्यक्ति अपने धर्म का पालन करे। ईसाई जन ईसा का अनुसरण करें और मुसलमान पैगम्बर मोहम्मद साहब का। हिन्दू अपने सनातन धर्म को मानें। एक सच्चा धार्मिक अन्य धर्मों को एक ही सत्य की ओर ले जाने वाले विभिन्न मार्गों के रूप में देखता है और उनका सम्मान करता है। कोई मनुष्य चाहे तो ईसाई बंधुओं के समान करुणावान, मुसलमानों के समान धार्मिक नियमों और परंपराओं का कठोरता से पालन करने वाला और हिंदुओं की भांति प्राणिमात्र के प्रति कल्याण की भावना रखने वाला बन सकता है। सर्वधर्म समभाव की शिक्षा अनेक मनीषियों द्वारा बहुत विद्वत्तापूर्ण ढंग से दी गई है। किंतु श्री रामकृष्ण देव की विलक्षणता यह थी कि उन्होंने सर्वधर्म समभाव के आदर्श को इस धरा पर अवतरित कर हमें यह बताया कि नाना प्रकार के निरर्थक भेदों और उपभेदों में पड़कर हम धार्मिक और जातीय वैमनस्य को अकारण ही बढ़ावा दे रहे हैं जबकि निर्मल हृदय साधक के लिए प्रत्येक साधना पद्धति से परम तत्व का ज्ञान प्राप्त अत्यंत सहज और सुगम है।

यह रामकृष्ण की निश्छल श्रद्धा ही थी जिसने सन 1864 में दक्षिणेश्वर पधारे जटाधारी महात्मा के पास स्थित रामलला के अष्ट धातु के विग्रह को चपल चंचल जीवित जाग्रत रामलला में परिवर्तित कर दिया था। स्वामी रामकृष्ण देव ने सर्व धर्म समभाव को जिया था। इस अमूर्त अवधारणा को उन्होंने अपनी साधना द्वारा इस धरा पर अवतरित किया था। तब जाकर वे यह कह पाए— मैंने हिन्दू, मुसलमान और ईसाई सभी धर्मों का अनुशीलन किया है। मैंने हिन्दू धर्म के विविध संप्रदायों के अलग अलग पंथों का भी अनुसरण किया है। मैंने जाना है कि उसी एक ईश्वर की तरफ सभी के पग उठ रहे हैं। भले ही उनके पथ भिन्न भिन्न हैं। तुम्हें भी प्रत्येक विश्वास की परीक्षा और इन भिन्न भिन्न पथों की यात्रा करनी चाहिए। मैं जिस ओर भी दृष्टिपात करता हूँ उस ओर हिन्दू, मुसलमान, ब्राह्म, वैष्णव और अन्य सभी सम्प्रदायवादियों को धर्म के नाम पर परस्पर संघर्ष करते देखता हूँ। परंतु वे इस बात पर कभी चिंतन नहीं करते कि जिसे हम कृष्ण के नाम से संबोधित करते हैं वही आद्य शक्ति है,वही शिव है, वही ईसा है और वही अल्लाह है, सब उसी के नाम हैं। एक ही राम के सहस्रों नाम हैं। सम्पूर्ण संसार एक ही ज्योति से प्रकाशित है। क्या वह ज्योति हिन्दू है या मुसलमान है या ईसाई है? नहीं, वह ज्योति है, परम ज्योति है। जब संसार के समस्त मानवों के भीतर एक ही दिव्य ज्योति की सत्ता है तो यह क्यों न कहा जाए कि वे परस्पर एक दूसरे के बंधु हैं और एक ही कुटुम्ब के सदस्य हैं। फिर क्या यह उचित नहीं है कि वे आपस में मिलकर रहें। उन्होंने यह भी कहा— लज्जा, घृणा, भय, जन्म, जाति, कुल और शील आदि अष्ट पाशों का समूल त्याग किए बिना ईश्वर प्राप्ति के मार्ग में कभी किसी को सफलता नहीं मिल सकती।

श्री रामकृष्ण ने ही आधुनिक जगत में सनातन धर्म की वास्तविकता को मूर्तिमान कर दिया। इसके विपरीत भी कुछ हो सकता है। यदि इसकी कल्पना की जाती है तो हम कल्पना करने के लिये तो स्वतंत्र है परन्तु उसकी सिद्धि के लिये कोई दूसरा श्री रामकृष्ण उत्पन्न होगा तभी सम्भव कहा जा सकता है। श्री अरविन्द ने तो प्रयोग करके दिखा लिया। श्री रामकष्ण ने सत्य को चरितार्थ किया था, कल्पना को नहीं। यह तो उनके जीवन की दिव्यता और क्रियाओं से ही स्पष्ट हो जाता है।

परमहंस श्री रामकृष्ण उस ऊँचाई के मनुष्य थे जहां से सभी धर्म सत्य और सब के सब समान दिखते है। जहां विवाद और शास्त्रार्थ की आवाज नहीं पहुँचती, जहां धर्म अपने राजनीतिक और सामाजिक गंध को छोड़कर केवल धर्म के रूप में अवस्थित रहता है। आनन्न उनका धर्म, अंतिन्द्रीय रूप का दर्शन, उनकी पूजा और विरह उनका जीवन था। उनके समकालीन अन्य सुधारक और सन्त पृथ्वी के वासी थे एवं पृथ्वी से ही वे ऊपर की ओर उठे थे। किन्तु श्री रामकृष्ण देवी अवतार की भांति आये। पृथ्वी पर वे भटकती हुई स्वर्ग के किरण के समान आये। दृश्य की ओर से चलकर दयानन्द, केशवचन्द्र, थियोसाफिस्ट लोगों ने जिस सत्य की ओर संकेत किया अदृश्य की ओर से आकर परमहंस श्री रामकृष्ण ने अपने उस सत्य को अपने ही जीवन में साकार कर दिया। भारतीय जनता का पांच हजार वर्ष पुराना धर्म साधना रूपी लता पर श्री रामकृष्ण सबसे

नवीन पुष्प बनकर चमके और उन्हें देखकर भारतीय जनता को फिर से ये विश्वास हो गया कि भारत में धर्म की अनुभूति जगाने वाले जिन अनंत ऋषियों और संतों की कथायें सुनी जाती है वे झूठी नहीं है।

श्री रामकृष्ण ने आकर ही वे देवी–देवता, पौराणिक आचार और अनुष्ठान, धर्म की विभिन्न साधनायें एवं जनता के अनेक धार्मिक विश्वास भी सत्य हुए। जिनकी ओर से बोलने का साहस किसी भी सुधारक को नहीं हुआ था। अन्य सभी सुधारक नवीन भारत के प्रतिनिधि थे। यद्यपि सत्य उन्होंने प्राचीन भारत का ही अपनाया था किन्तु श्री रामकृष्ण के रूप में भारत की सनातन परम्परा ही देह धरकर खड़ी हो गई। हिन्दू धर्म जो गहराई और माधुर्य है श्री रामकृष्ण उनकी प्रतिमा थे।

इसका सबसे प्रमुख कारण यह है कि उन्होंने जिस सत्या का उद्घाटन किया है। उसका रहस्य ज्ञान नहीं, अनुभूति है, फिलासफी नहीं दर्शन है, पंथ नहीं अनुभूति है। इसके विषय में श्री दिनकर की ही उक्ति ही पर्याप्त है। उनकी उक्तियों में श्री रामकृष्ण ने प्राचीनता में नवीनता उत्पन्न की है यही प्रगट होता है। उनका कहना है। कि– ''श्री रामकृष्ण के आगमन से धर्म की अनुभूति प्रत्यक्ष हुई, उन्होंने अपने जीवन में यह बता दिया कि धार्मिक सत्य केवल बौद्धिक अनुमान की वस्तु नहीं है, वे प्रत्यक्ष अनुभव के विषय है, और उनके सामने संसार की सारी तृष्णायें, सारी सुखभोग तृणवत् नगण्य है।''

अतएव मेरी धारणा यह है कि समस्त धर्म ईश्वर की अनन्त शक्ति का केवल विभिन्न प्रकाश हैं और वे मनुष्यों का कल्याण साधन कर रहे हैं उनमें से एक भी नहीं मरता, एक को भी विनष्ट नहीं किया जा सकता। जिस प्रकार किसी प्राकृतिक शक्ति को नष्ट नहीं किया जा सकता, उसी प्रकार इन आध्यात्मिक शक्तियों में से किसी एक का भी विनाश नहीं किया जा सका। आप देखेंगे कि प्रत्येक धर्म जीवित हैं समय प्रभाव से वे उन्नति या अवनित की ओर अग्रसर हो सकते हैं। किसी समय या तो इनके ठाटबाट का हास हो सकता है। या कभी इनके ठाटबाट का दौर–दौरास हो सकता हैं, परन्तु उनकी आत्मा या प्राणवस्तु उनके पीछे मौजूद है। वह कभी विनष्ट नहीं होता, इसलिए प्रत्येक धर्म ही ज्ञात भाव से अग्रसर होता जा रहा है। और वह सार्वभौमिक धर्म, जिसके सम्बन्ध में सभी देशों के दार्शनिकों ने और अन्यान्य व्यक्तियों ने कितने ही प्रकार की कल्पनाएँ की है।

धर्म के सम्बन्ध में भी ठीक यहीं बात हैं सब पुराने धर्मों के आज भी जीवित रहने से प्रमाणित होता है कि उन्होंने निश्चय ही उस उद्देश्य को अटूट रखा हैं उनके द्वारा अनेक गलतियाँ होने पर भी, उनके सम्मुख अनेक विध्नबाधाएं होने पर भी, उनमें अनेक विवाद–विसवाद होने पर भी, उनके ऊपर तरह तरह के अनुष्ठान और निर्दिष्ट प्रणाली में आवर्जग्ना–स्तूष संचित होने पर भी उनमें से प्रत्येक का हपिण्ड ठीक हैं वह जीवित हपिण्ड की तरह स्पन्दित हो रहा हैं धकधक कर रहा हैं जो महान् उद्देश्य लेकर वे आये हैं उनमें से एक को भी वे नहीं भूले। उस उद्देश्य को अध्ययन करना महत्वपूर्ण है। दृष्टान्त रूप मुसलमान धर्म की बात लीजिये। ईसाई धर्मावलम्बी मुसलमाना धर्म से जितनी अधिक घृणा करते हैं उतनी और किसी से नहींवे सोचते हैं, इस प्रकार का निकृष्ट धर्म और कोई भी नहीं हुआ। किन्तु देखिये जैसे ही एक आदमी ने मुसलमान धर्म ग्रहण किया, सारे मुसलमानां ने उसकी पिछली बात को छोड़, उसे भाई कहकर छाती से लगा लिया। ऐसा कोई भी धर्म नहीं करता। यदि एक रेड इण्डियन मुसलमान हो जाय, तो तुर्की के सुल्तान भी उसके साथ भोजन करने में आपत्ति न करेंगे और यदि वह शिक्षित व बुद्धिमान हो, तो राजकाज में भी कोई पद प्राप्त कर सकता हैं परन्तु इस देश में मैने एक भी ऐसा गिरजा नही देखा, जहां गोरे और काले पास पास घुटने टेककर प्रार्थना कर सकें। इस बात को विचार देखिये कि इस्लामधर्म अपने सब अनुयायियों को समभाव से देखता हैं इसी से आप देखते है कि मुसलमान धर्म की यह विशेषता और श्रेष्ठत्व हैं कुरान में बहुत जगह जीवन के विषय–सुख की बातें देखी जाती है उसकी चिन्ता मत कीजिए। मुसलमान धर्म संसार में जिस बात का प्रचार करने आया हैं, वह यहीं यथार्थ भ्रातृभाव– जो मुसलमान धर्मावलम्बी एक दूसरे के प्रति धारणा करते है।

हिन्दू धर्म में एक जातीय भाव देखने को मिलेगा वह है आध्यात्मिकता और किसी भी धर्म में संसार के और किसी धर्मग्रन्थों में ईश्वर की परिभाषा करने में इतना अधिक बल दिया गया हो, ऐसा देखने को नहीं मिलता। उन्होंने ऐसे भावों से आत्मा की संज्ञा निर्देश करने की चेष्टा की है कि कोई पार्थिव संस्पर्श उसको कलुषित नहीं कर सकता। आत्मा अपार्थिव वस्तु है और इस अर्थ से उसमें कभी मानवीय भाव आरोपित नहीं किया जा सकता। उसी एकत्व की धारणा–सर्वव्यापी ईश्वर की उपलब्धि का सर्वत्र उपदेश मिलता है। ईश्वर स्वर्ग में वास करते है। आदि

उक्तियाँ हिन्दुओं के निकट प्रलोपोक्ति के अतिरिक्त और कुछ नहीं है। वह मनुष्य द्वारा भगवान पर मनुश्योचित गणावली का आरोप मात्र हैं यदि स्वर्ग कोई वस्तु है तो, वह अभी और यहीं मौजूद है। अनन्तकाल का एक मुहुर्त जैसा हैं दूसरा कोई अन्य मुहुर्त भी वैसा ही हैं जो ईश्वरं– विश्वासी हैं वह अभी भी उनका दर्शन पा सकता है। हमारे मत से कुछ उपलब्धि होने पर ही धर्म का आरम्भ होता है। कुछ मतों में विश्वास करना था उन्हें युक्तियक्त कहकर स्वीकार करना अथवा प्रकाश्य भाव से उन्हें अपना धर्ममत कहकर व्यक्त करना इनसे कोई भी धर्म नहीं है। आप कह रहे हैं, "ईश्वर है।''– ''क्या आपने उन्हें देखा हैं?'' यदि कहें, 'नहीं' तब आपको उस पर विश्वास करने का क्या अधिकार हैं और यदि आपको ईश्वर के अस्तित्व के सम्बन्ध में कोई सन्देह हो, तो उन्हें देखने के लिए प्राणषण से कोशिश क्यों नहीं करते आप संसार त्यागकर इस उददेश्य–सिद्धि के लिए सारा जीवन क्या नही लगा देते। त्याग और आध्यात्मिकता ये दोनों ही भारत के महान् आदर्श है और इनकी जकड़ रहने के कारण ही उसमें इतनी मूलभ्रान्ति होने पर भी कुछ विशेष आता जाता नहीं।

ईसाइयों का प्रचारित मूलभाव भी यहीं हैं सतर्क रहो, प्रार्थना करें कारण, भगवान का राज्य अति निकट हैं. अर्थात् चित्तशुद्धि करके प्रस्तुत रही। और यह भावक भी भी नष्ट नहीं हुआ। आप लोगों को शायद स्मरण हो कि ईसाई लोग अज्ञानावस्था से ही, अति अन्धविश्वासग्रस्त ईसाई देशों में भी, औरों की सहायता करना, चिकितसालय तैयार करना आदि सत् कार्यों द्वारा अपने को पवित्र कर ईश्वर के आगमन की प्रतीक्षा कर रहे है। जितने दिन तक वे इस लक्ष्य पर स्थिर रहेंगे उतने दिन तक उनका धर्म जीवित रहेगा।

आजकल लोग कहते हैं कि मनुष्य दिन दूनी रात चौगुनी प्रगति कर रहा हैं, किंतु उसके समक्ष कोई ऐसा बिन्दु नहीं जिसे वह अपने पूर्णतम विकास को प्रतीक मान ले सतत् आगे बढ़ते जाओं पर पहुँचों कहीं नहीं। इसका जो भी अर्थ हो, जितना ही अद्भुत यह क्यों न हो, किन्तु हैं एकदम अनर्गल द्य क्या कोई भी गति सीधी रेखा में होती हैं? और यदि सीधी रेखा अनन्त दूरी तक बढ़ायी जाए तो वह एक वृत्त बना देती हैं, और आदि बिन्दू पर लौट आती हैं। जहॉ से तुमने आरम्भ किया था, वही लौटकर आना पड़ेगा। अगर तुमने ईश्वर से प्रारम्भ किया है। तो अनन्त काल तक तुमकों स्फूट कार्य करते रहना पड़ेगा।

क्या प्रगति के पथ में हम नये धार्मिक सत्यों का भी अनुसंधान कर सकते हैं हॉ और नहीं भी पहले तो हम धर्म के बारे में इससे अधिक अब नहीं जान सकते। जो ज्ञेय था, वह ज्ञात हो चुका हैं संसार के सभी धर्म घोषित करते है। कि हम सब में एकता का कोई न कोई सूत्र हैं अगर हम उस दैवी सत्ता से एक हो चुके, तो इस अर्थ में आगे और प्रगति नहीं हो सकती। ज्ञान का अर्थ हैं विविधता में इस एकता की उपलब्धि। मैं तुम लोगों के बीच स्त्री और पुरूष देखता हूँ– यह हुई विविधता। यदि मैं तुम सब लोगों को एक ही वर्ग में रखकर मानव कहूँ तो यह वैज्ञानिक ज्ञान कहा जाएगा। दृष्टान्त के लिए रसायनशास्त्र को लो। सभी ज्ञात पदार्थों को रसायनशास्त्री उनके मौलिक तत्वों में विश्लेषित करना और यदि सम्भव हो तो, उस एक तत्व को खोज लेना चाहते है। जिससे वे सब उद्भूत हुए है। ऐसा समय आ सकता है जब से इस एक श्तत्व को जान लेंगे। उसका पता चल जाने पर वे और आगे नहीं जा सकेंगे। रसायनशास्त्र पूर्ण हो। जाएगा। ठीक यहीं बात आध्यात्मिक विज्ञान के साथ भी है। यदि हम इस मौलिक एकता को जान लेते हैं, तो और आगे प्रगति नहीं हो सकती।

श्री रामकृष्ण ने यह बतलाया कि पन्त नहीं अनुभूति धर्म जीवन में आवश्यक है। यही श्री रामकृष्ण की महोपलब्धी है। जब आस्तिक और नास्तिक हिन्दू, ईसाई और मुसलमान आपस में इस प्रश्न पर लड़ रहे थे कि किसका धर्म ठीक है। और किसका नहीं तब श्री रामकृष्ण ने सभी धर्मों के मूल तत्व को अपने जीवन में साकार करके मानों सारे विश्व को यह संदेश दिया कि धर्म को शास्त्रार्थ का विषय मत बनाओं, हो सके तो उसकी सीधी अनुभूति के लिये प्रयास करो। सभी धर्म ईश्वर की ओर ले जाने वाले अनेक मार्ग है। परमहंस का उपदेश जो भी था, उन्होंने अपने जीवन में उतारा।श्श उन्होंने हिन्दूत्व की सभी मार्गों की साधना की। भारतवर्ष की धार्मिक समस्या का जो समाधान श्री रामकृष्ण ने दिया है उससे बड़ा और अधिक उपयोगी समाधान और कोई हो ही नहीं सकता। शांति मार्ग से नहीं अनुभूति से मिलती है। जबतक तुम अनुभूति की उँचाइयों पर हो तबतक यह सोचना व्यर्थ है कि– तुम हिन्दू हो या मुसलमान।"

जब हममें से अधिकांश बुद्धिजीवी सर्व धर्म समभाव को एक अप्राप्य आदर्श मानकर हताश होने लगते हैं तब रामकृष्ण परमहंस का जीवन हमें यह संदेश देता है कि सर्व धर्म समभाव निरा आदर्श नहीं है बल्कि अनुभूत

यथार्थ है। सर्व धर्म समभाव परम सत्य है और धार्मिक कट्टरता तथा साम्प्रदायिकता इस परम सत्य से विमुख हो इसे विस्मृत कर देने की दुःखद परिणति हैं।

सन्दर्भ–ग्रन्थ सूची

1. श्री रामकृष्ण वचनामृतम्, द्वितीय संस्करण– पृ0 503
2. श्री रामकृष्ण वचनामृत भाग– 3, पृ0– 312–315
3. श्री रामकृष्ण वचनामृतम् भाग– 3, पृ0– 557
4. श्री रामकृष्ण वचनामृतम्, भाग–1, पृ0– 412
5. श्री रामकृष्ण वचनामृतम्, पृ0– 418
6. श्री रामकृष्ण वचनामृतम, प्रथम संस्करण, पृ0– 301
6. श्री रामकृष्ण वचनामृतम्, भाग–1, पृ0 309

LBP PUBLICATION